श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

।। भागवतम् शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका- स्तर १।।

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

।। भागवतम् शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका- स्तर १।।

किसी भी भाषा को लिखने, पढ़ने और बोलने के निश्चित नियम होते हैं।भाषा की शुद्धता एवं सुंदरता को बनाए रखने के लिए इन नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। यह सभी नियम व्याकरण के अंतर्गत आते हैं। कुछ मुख्य नियम हम यहाँ सीखने का प्रयास करेंगे।

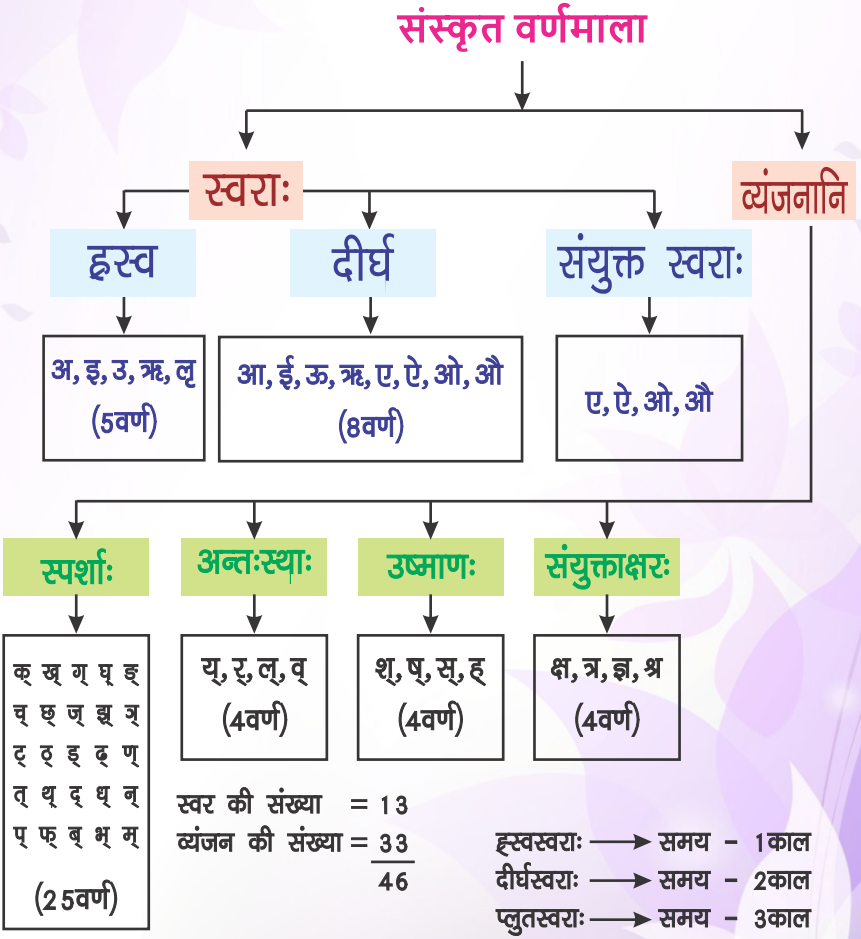

उच्चारण स्थानानि

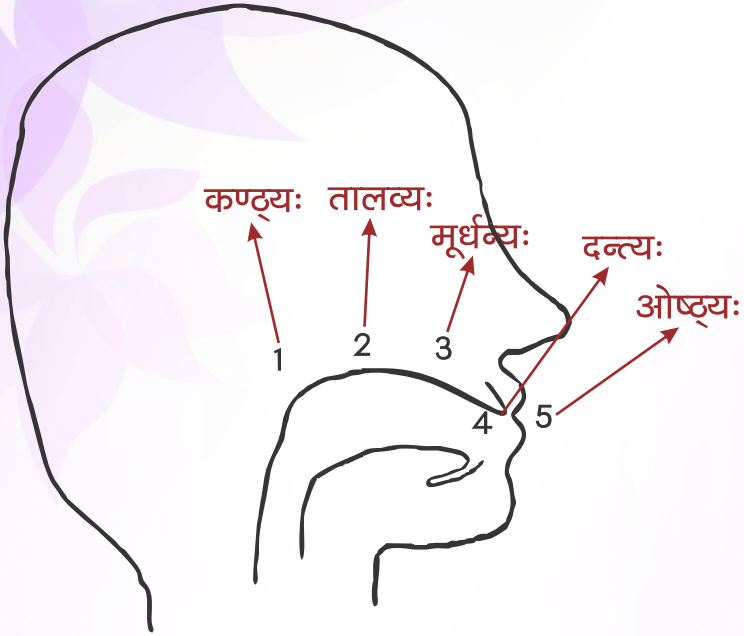

वर्णों के उच्चारण स्थान

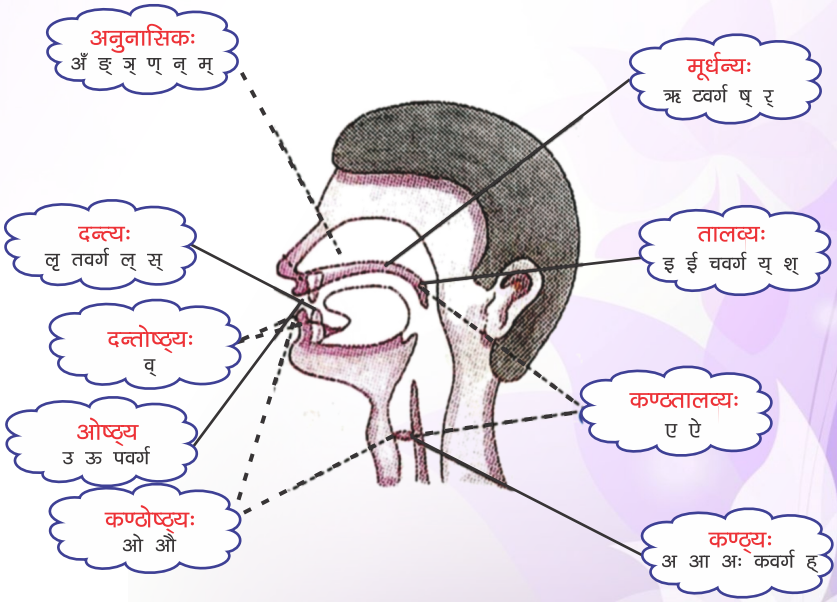

वर्गाक्षराः / स्पर्शाः
अल्पप्राणः महाप्राणः

						अनुनासिकाः	
(क-वर्ग)		क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	कण्ठ्यः
(च-वर्ग)		च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	तालव्यः
(ट-वर्ग)		ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	मूर्धन्यः
(त-वर्ग)		त्	थ्	द्	ध्	न्	दन्त्यः
(प-वर्ग)		प्	फ्	ब्	भ्	म्	ओष्ठ्यः

य्	र्	ल्	व्	अन्तःस्थाः
श्	ष्	स्	ह्	उष्माणः

अयोगवाहाः

1. विसर्गः ह् ध्वनि (उदाहरण-अः/कः)
2. अनुस्वारः म् ध्वनि (उदाहरण-अं/कं)
3. उपध्मानीयः विसर्ग के बाद प् / फ् ध्वनि – फ् ध्वनि
4. जिह्वामूलीयः विसर्ग के बाद क् / ख् ध्वनि- ख् ध्वनि

अनुस्वार

ऐसा वर्ण जो स्वर के पश्चात आता है तथा जिसका उच्चारण नासिका से किया जाता है अनुस्वार का उच्चारण उसके बाद आने वाले वर्ण के अनुसार किया जाता है इसे स्वरादि भी कहते हैं इसके पहले स्वर आएगा ही आएगा। अहं, सत्यं, गृहं

अनुनासिक

जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है वे अनुनासिक कहलाते हैं। माँ, आँख, चाँद, ऊँचा

अनुस्वार उच्चारण नियम

कं
कां
किं
कीं
कुं
कूं
कें
कैं
कों
कौं

\+

कवर्ग	ङ्	दर्शनं(ङ्) कृतम् (Rg-1)
चवर्ग	ञ्	न मद्भागवतानां(ञ्) च (Rg-4)
टवर्ग	ण्	कं(ण्)ठे च मुक्तावली
तवर्ग	न्	श्रूयतां(न्) तद्वदामि
पवर्ग	म्	एवं(म्) मे (Rg-1)

विशिष्ट वर्ग य से ह तक अनुस्वार उच्चारण नियम (शब्द के बीच में)

- जब अनुस्वार के बाद विशिष्ट वर्ग के र,व,श,ष,स, ह हों - अनुस्वार का उच्चारण व् के साथ रहसि सं(व्)विदो (Gg- 10)
- जब अनुस्वार के बाद ल हो, तो अनुस्वार का उच्चारण ल् की तरह होगा।

स एष भगवांल्लिङ्गै: (2.5.20)

- जब अनुस्वार के बाद य हो, तो अनुस्वार का उच्चारण य् की तरह होगा।

तत्प्रादुर्भावसंयोग (4.1.23)

विसर्ग

विसर्ग भी स्वर के पश्चात ही आता है, यह अपने आप में कोई अलग वर्ण नहीं है। यह केवल स्वराश्रित है और किसी उच्चारण का प्रतीक मात्र है इसे(:) चिह्न से दर्शाया जाता है।

विसर्ग उच्चारण नियम

कः-ह/हा	मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः (nk- 9)
काः-हा	दिशो विनेदुर्न्यपतं(व्)श्च गर्भाः (nk-14)
किः-हि	मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः (nk -20)
कीः-हि	सरस्वत्यां च तत्सखीः (9.14.33)
कुः-हु	तोभश्छन्दोमयः(फ्) प्रभुः (nk-29)
कूः-हु	धनकः कृतवीर्यसूः (9.23.23)
केः-हे	कर्णस्य जगतीपतेः (9.23.14)
कोः हो	यज्ञे वामप्यसोमपोः (9.3. 12)
कैः-हि	मुच्यते कर्मबन्धनैः (Rg- 52)
कौः-हु	स्वयं विष्णुरयं हि गौः (7.10.62)

विसर्ग उच्चारण नियम (चरण के बीच में)

- विसर्ग का स् में परिवर्तित होना
  यया गुप्तः(स्) सहस्राक्षः (nk -1)
- विसर्ग का श् में परिवर्तित होना
  यथाऽऽततायिनः(श्) शत्रून् (nk - 2)
- विसर्ग का फ् में परिवर्तित होना
  वृतः (फ्) पुरोहितस्त्वाष्ट्रो (nk-3)
- विसर्ग का ख् में परिवर्तित होना
  करन्यासं(न्) ततः(ख्) कुर्याद् (nk- 7)

आघात

शब्दों के उच्चारण में अक्षर पर जो जोर (चोट धक्का)लगता है, उसे आघात या बल कहते हैं।

आघात उच्चारण नियम

1. संयुक्त वर्ण (दो व्यंजन वर्णों का संयोग) होने पर प्रथम वर्ण का द्वित्व (दो बार उच्चारण) करना चाहिए।
   संयुक्ताक्षर में आधे व्यंजन को द्वित्व करना (सर्वपापप्रणाशनम् (प्रार्थना)
2. यदि एक व्यंजन और एक स्वर है तो वह संयुक्त वर्ण नहीं होता (दोनों वर्ण व्यंजन ही होने चाहिए) वहां आघात नहीं दिया जाएगा। (आर्तो दृष्ट्वा (Gm-32)
3. तीन व्यंजन संयुक्त होने पर आघात नहीं दिया जाएगा।
   (नमस्त्रैलोक्यपालाय (Rg -13)
4. ह कार अर्थात् संयुक्ताक्षर में प्रथम वर्ण ह् आने पर आघात नहीं दिया जाएगा
   (सन्नह्येद् भय आगते (Nk -5)
5. रेफ (ऊपर र्" ˋ") होने पर भी आघात नहीं दिया जाएगा। (नारायणमयं वर्म (Nk-5)
6. एक ही वर्ण के दो बार आने पर भी आघात नहीं लगेगा। (क्रीडन्निव विनिर्जित्य (Nk -1)
7. यदि किसी वर्ण में दीर्घ मात्रा लगी है और उसके आगे संयुक्ताक्षर है, तब भी दीर्घ मात्रा पर आघात देने की कोई आवश्यकता नहीं है

अवग्रह

देवनागरी लिपि में अवग्रह "ऽ" एक चिह्न है, जिसका प्रयोग संधि के कारण लोप हुए अकार (अ) को दर्शाने के लिए किया जाता है। पद के अंत में ए/ओ अथवा आ के बाद यदि अकार आए तो उसका लोप हो जाता है।इसी लोप हुए अकार को "ऽ" चिन्ह से दिखाया जाता है

अवग्रह के उदाहरण

यथाऽऽततायिनः(श्) शत्रून्, येन गुप्तोऽजयन्मृधे (Nk- 2)